A Report on the Training Programme on "Cultivation of Medicinal Plants" funded by Ministry of Environment, Forest and Climate Change and organized by HFRI, Shimla, from 19.10.2015 to 21.10 2015 at Manali, District Kullu (H. P.)

Himalayan Forest Research Institute, Shimla, organized a three days training and demonstration programme on **'Cultivation of Medicinal Plants"** for other stakeholders at Wild Life Interpretation and Information Centre, Manali, District Kullu (H.P.) from 19.10.2015 to 21.10.2015. The training programme was funded by the Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Govt. of India New Delhi. A total of 40 participants from different stakeholders including members of village Panchayats, Non-Governmental Organizations, members of civil society, media persons and progressive farmers of Kullu district actively participated in this training programme. The main objective of this training programme was to sensitize other stakeholders towards medicinal plants cultivation and their conservation.

Dr. V.P. Tewari, Director, HFRI, Shimla inaugurated the training programme on 19th October, 2015. In his inaugural address, Dr. Tewari stressed upon the farmers to undertake the cultivation of medicinal plants on their agricultural lands. He told that this will not only increase their income but also help in conservation of threatened medicinal plants, which are on the verge of extinction due to unscientific and overharvesting from the wild sources. He emphasized the importance of such training programme, especially for initiating commercial cultivation of medicinal plants in Kullu valley of Himachal Pradesh. He also highlighted the efforts of the institute for bringing out the quality course material in simple vernacular language for the benefit of various stakeholders and asked the participants to actively involve themselves in this three days training programme for the ultimate benefit of medicinal plants sector in the state. He hoped that representatives of this training programme will act as Nodal Officers for creating awareness about the medicinal plants amongst various stakeholders.

The proceedings of the forenoon session started with the talk of **Sh. Jagdish Singh,** Scientist-E who gave a brief presentation on the activities and achievements of Himalayan Forest Research Institute, Shimla. **Sh. B. S. Rana, IFS, Conservator of Forest**, GHNP, Kullu made presentation on "Overview of Non-Timber Forest Produce and their Regulations" in Himachal Pradesh. Thereafter, **Sh. Pitamber Singh Negi, Scientist-B** gave a detailed presentation on "Important medicinal plants of Himachal Pradesh, their distribution, identification and uses".

In the afternoon session, **Dr. Manoj Thakur, Scientist** from Regional Horticultural Research Station, Bajaura made presentation on "Agro technique of Karu (*Picrorhiza kurrooa*) and Patish (*Aconitum heterophyllum*)". **Dr. Ranjana Arya, Scientist-G** from Arid Forest Research Institute, Jodhpur delivered a lecture on "Sustainable harvesting technique of medicinal plants". Thereafter, **Dr. Sandeep Sharma, Scientist-F** presented his work on nursery techniques for

raising Atish (*Aconitum heterophyllum*), Chora (*Angelica glauca*) and Kukti (*Picrorhiza kurroa*) and **Sh. Jagdish Singh, Scientist-E** gave a presentation on nursery and cultivation techniques of *Podophyllum hexandrum* (Ban Kakri) and Inter-cultivation of medicinal plants in orchards of temperate areas of Himachal Pradesh.

On second day of training programme (20.10.2015), the trainees were taken to the HFRI's Field Research Station, Brundhar for on-spot field identification of important medicinal plants and demonstration of medicinal plant cultivation technology developed by the Institute. The trainees were given on-site demonstration on macro-proliferation and cultivation techniques of important medicinal plants viz., *Aconitum heterophyllum, Picrorhiza kurrooa, Valeriana jatamansi, Angelica glauca* and *Podophyllum hexandrum* by the Scientists of HFRI, Shimla.

On the third day of training programme (21.10.2015), **Dr. Ranjeet Singh, Scientist-F** made a detailed presentation on "Medicinal Plants and Pest Control Methods". **Dr. Chanderkanta Vats, Scientist** from Krishi Vigyan Kendra, Bajaura delivered a lecture on "Recapturing Minor Millets for Medicinal Value". In her presentation, she stressed upon the importance of minor millets and their role in traditional health system. Thereafter, **Dr. Sandeep Sharma, Scientist–F** talked about Modern Nursery Techniques**,** vermi-composting techniques, organic farming and marketing issues of medicinal plants for the benefit of participants. Sh. **Jagdish Singh** talked about „Collection and Storage of important medicinal plants'. Sh. **Nand Lal Sharma**, CEO, Nanda Medicinal Plants Exports, Mansari delivered an interesting lecture on „Marketing of Medicinal Plants'.

In the afternoon, to further benefit the participants, an interactive session was conducted among the participants and resource persons. During this session, participants expressed their opinion and concern about medicinal plants cultivation & conservation, and freely interacted with the resource persons. Relevant queries of the participants pertaining to various issues regarding cultivation of medicinal plants were duly addressed by the resource persons. In the closing ceremony of training programme, **Dr. V. P. Tewari, Director, HFRI** distributed certificates to all the participants of the training programme. Finally, **Sh. Jagdish Singh, Course Coordinator** extended formal vote of thanks to all the participants and resource persons of training programme.

Glimpses of Training Programme

अमर उजाला - 20/10/2015

औषधीय पौधों की खेती करें किसान

शिविर में किसानों को किया जागरूक

अमर उजाला ब्यूरो

मनाली (कुल्लू)। मनाली में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में मनाली के किसानों-बागवानों को मूल्यवान एवं महत्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती हेतु जानकारी उपलब्ध करवाई गई। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक वीपी तिवारी ने औषधीय पौधों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि दवाइयों के लिए अधिक प्रयोग में लाई जा रही जड़ी-बूटी लुप्त हो रही है उनके संरक्षण और संवर्धन को लेकर किसान जागरूक हों तथा जड़ी-बूटी को खेतों में उगाकर अपनी आर्थिकी को सुदृढ़ करें। शुष्क वन अनुसंधान संस्थान जोधपुर की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रंजना आर्य ने भी जड़ी-बूटियों की जानकारी किसानों-बागवानों को दी। वन्य प्राणी विभाग के अरण्यपाल बीएस राणा ने किसानों-बागवानों को लुप्त हो रही जड़ी-बूटियों के बारे में बताया तथा किसानों को औषधीय पौधों की खेती करने के लिए प्रेरित किया। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. जगदीश सिंह ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के बारे में जानकारी दी। उन्होंने वन ककड़ी की नर्सरी एवं खेती, फलदार एवं वानिकी पौधों के मध्य औषधीय पौधों की खेती के बारे में बताया। वैज्ञानिक डॉ. संदीप शर्मा ने भी व्यवसायिक कृषि की तकनीक के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि मंगलवार को विशेषज्ञ डॉ. एवं किसान जगतसुख में भूणधार नर्सरी के क्षेत्र का भ्रमण करेंगे तथा महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की नर्सरी तैयार करने की तकनीकों बारे किसानों को जानकारी देंगे।

हिमाचल दस्तक 20-10-15

औषधीय खेती के बारे में दी जानकारी

मनाली। मनाली में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से एकदिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मनाली के किसानों-बागवानों को मूल्यवान एवं महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की खेती हेतु जानकारी उपलब्ध करवाई गई। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक वीपी तिवारी ने औषधीय पौधों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि दवाइयों के लिए अधिक प्रयोग में लाई जा रही जड़ी-बूटी लुप्त हो रही है उनके संरक्षण और संवर्धन को लेकर किसान जागरूक हों तथा जड़ी-बूटी को खेतों में उगाकर अपनी आर्थिकी को सुदृढ़ करें। शुष्क वन अनुसंधान संस्थान जोधपुर की वरिष्ठ वैज्ञानिक डाक्टर रंजना आर्य ने भी जड़ी बूटियों की विस्तृत जानकारी दी। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक डाक्टर जगदीश सिंह ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के बारे में जानकारी दी संस्थान की गतिविधियों से अवगत करवाया।

ने जरूरी अनुमतियां नहीं ली थीं।

पंजाब केसरी (20-10-15)

औषधीय खेती की जानकारी दी

मनाली, 19 अक्तूबर (राकेश): हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से एकदिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मनाली के किसानों-बागवानों को मूल्यवान एवं महत्वपूर्ण सम शीतोषण औषधीय पौधों की खेती हेतु जानकारी उपलब्ध करवाई गई। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक वी.पी. तिवारी ने औषधीय पौधों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि दवाइयों के लिए अधिक प्रयोग में लाई जा रही जड़ी-बूटियां लुप्त हो रही हैं उनके संरक्षण और संवर्धन को लेकर किसान जागरूक हों तथा जड़ी-बूटियों को खेतों में उगाकर अपनी आर्थिकी को सुदृढ़ करें। शुष्क वन अनुसंधान संस्थान जोधपुर की वरिष्ठ वैज्ञानिक डाक्टर रंजना आर्य ने भी जड़ी-बूटियों की जानकारी किसानों-बागवानों को दी। वैज्ञानिक डाक्टर संदीप शर्मा ने उच्च पर्वतीय भागों में पाए जाने वाले महत्वपूर्ण औषधीय पौधों जैसे पतीश, कडू, मुश्कबाला तथा चोरा की व्यावसायिक कृषिकरण की तकनीक बारे बताया।

औषधीय पौधे लगाएं

मनाली - मनाली में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मनाली के किसानों-बागबानों को मूल्यवान एवं महत्वपूर्ण समशीतोषण औषधीय पौधों की खेती पर जानकारी उपलब्ध करवाई गई। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक वीपी तिवारी ने औषधीय पौधों की विस्तृत जानकारी दी। शुष्क वन अनुसंधान संस्थान जोधपुर की वरिष्ठ वैज्ञानिक डाक्टर रंजना आर्य ने भी जड़ी-बूटियों की विस्तृत जानकारी किसानों-बागवानों को दी। वन्य प्राणी विभाग के अरण्यपाल बीएस राणा ने किसानों-बागवानों को लुप्त हो रही जड़ी-बूटियों बारे जानकारी दी तथा किसानों को औषधीय पौधों की खेती करने को प्रेरित किया।

दिव्य हिमाचल 20-10-15

...सिंह, मृदुला, पवन सहित अन्य मौजूद थे।

...की उन्नति में अपनी भागीदारी

दैनिक जागरण 21-10-15

औषधीय पौधों को खेती में शामिल करें किसान : तिवारी

- प्रदेश में 399 वन औषधीय पौधों की हो चुकी है पहचान

संवाद सहयोगी, मनाली : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने कहा कि प्रदेश के किसान और बागवान औषधीय पौधों को अपनी खेती में शामिल करें। उन्होंने कहा कि पर्यटन और सेब के बाद वन औषधीय पौधे प्रदेश में आर्थिकी की रीढ़ साबित होंगे। डॉ. तिवारी सोमवार को औषधीय पौधों की खेती को लेकर आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन में भाग लेने के बाद पत्रकारों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रदेश में लगभग तीन सौ वन औषधीय पौधों की पहचान की गई है। बागवान किसान अगर इन औषधीय पौधों की खेती करते हैं तो प्रदेश की आर्थिकी मजबूत होने के साथ-साथ देश और विदेश में दवाईयां बनाने को जड़ी-बूटी की कमी नहीं रहेगी। डॉ. तिवारी ने कहा कि लुप्त हो रही प्रजातियों को लेकर भारत सरकार शीघ्र ही गाइड लाइन जारी कर रही है। जड़ी-बूटियों का दोहन अधिक होने से वे लुप्त होने की कगार पर पहुंच गई है, जिस पर पाबंदी लगानी पड़ी है। शुष्क वन अनुसंधान संस्थान जोधपुर की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रंजना आचार्य ने कहा कि राजस्थान में शुष्क क्षेत्र में भी गुगल जैसी औषधीय पौधे उगाए जा रहे हैं।

भूणधार नर्सरी का दौरा कर दी तकनीकी जानकारी

संवाद सहयोगी, मनाली : मनाली में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम के दूसरे दिन जगतसुख की भ्रूणधार नर्सरी का भ्रमण किया गया। जगतसुख में भ्रूणधार नर्सरी में औषधीय पौधों की नर्सरी तैयार करने की तकनीकों बारे जानकारी दी। मनाली के किसानों-बागवानों को मूल्यवान एवं महत्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती के लिए जानकारी उपलब्ध करवाई गई। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक वीपी तिवारी ने औषधीय पौधों बारे बताया तथा किसानों-बागवानों को औषधीय खेती करने की ओर प्रेरित किया। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक डाक्टर संदीप शर्मा और वैज्ञानिक जगदीश सिंह ने जगतसुख के भ्रूणधार में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा लगाई नर्सरी में उगाए गए औषधीय पौधों की किसानों-बागवानों को विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने वन ककडी की नर्सरी एवं खेती, फलदार एवं वानिकी पौधों के मध्य औषधीय पौधों की खेती बारे भी किसानों को बताया। डाक्टर संदीप शर्मा ने बताया कि कार्यशाला बुधवार को समापन हो जाएगी।

आयोजन

- कार्यशाला के दूसरे दिन नर्सरी में लगे औषधीय पौधों की दी जानकारी

प्रदेश में लुप्त हो रही 30 औषधीय पौधों की प्रजातियां

हिमाचल प्रदेश में 300 से अधिक औषधीय पौधों की प्रजातियां पाई जाती है। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के अनुसार प्रदेश में 30 औषधीय पौधों की प्रजाति लुप्त होने के कगार पर है।

संस्थान के अनुसार पतीश, मोहरा, अतीश, चौरा, रत्नजौत, सेसकी, झरका, हरिद्रा, कश्मल, पाषाण भेद, भोजपत्र, काला जीरा, तेज पत्र, सुरंजा, सालम पंजा, सिगली-मिगली, सोम, कौड़, वृद्धि, अृद्धि, कचूर, पुष्कर मूल, धूप, श्रृषभक, जीवक, जटामांसी, कुटकी, वन ककड़ी, सालम मिश्री, सर्पगंधा, रेवंद चीनी, कुठ, भल्लातक, कस्तुरी पत्र, चिरायता, तालिस पत्र, जंगली प्याज, तेज और सुगंधवाला जैसे औषधीय पौधे लुप्त होने की कगार पर है।